महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता
और भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

समय, साहित्य, संस्कृति और गांधी

5-6 दिसंबर 2024

संरक्षक

प्रो. कृष्ण कुमार सिंह
कुलपति
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

संयोजक

डॉ. अमित राय
एसोसिएट प्रोफेसर, क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

आयोजन समिति

डॉ. चित्रा माली
डॉ. अभिलाष कुमार गोंड
डॉ. ऋचा द्विवेदी
डॉ. आलोक कुमार सिंह

आयोजन स्थल

राधानाथ सिकदर, तेंज़िंग नॉर्गे भवन
विवेकानंद युवा भारती क्रीडांगण
रैम्प नंबर 4, सॉल्टलेक स्टेडियम, कोलकाता - 91

संगोष्ठी के लिए आलेख/शोध आलेख 02 दिसंबर 2024 तक भेजे जा सकते हैं
संपर्क : 9422905719/ raiamit14@gmail.com

पंजीयन लिंक : https://forms.gle/axeLhz6UFbDzUyzEA

उदघाटन सत्र

05 दिसंबर, 2024

(पूर्वाह्न 10:30 से अपराह्न 12:00 तक)

समय, साहित्य, संस्कृति और गांधी

प्रथम अकादमिक सत्र

(अपराह्न 12:00 से 02:00 तक)

समय और साहित्य

भोजन अंतराल

(अपराह्न 02:00 से 03:00 तक)

द्वितीय अकादमिक सत्र

(अपराह्न 03:00 से 05:00 तक)

गांधी और विश्व दृष्टि

06 दिसंबर, 2024

तृतीय अकादमिक सत्र

(पूर्वाह्न 11:00 से अपराह्न 01:00 तक)

कला संस्कृति और फिल्म

भोजन अंतराल

(अपराह्न 01:00 से 02:00 तक)

चतुर्थ अकादमिक सत्र

(अपराह्न 02:00 से 04:00 तक)

शोध पत्र प्रस्तुति

समापन सत्र

(अपराह्न 04:00 से 05:00 तक)

आयोजक

क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

ऐकतान, आईए-290, सेक्टर III, साल्टलेक, कोलकाता - 700097

समय, साहित्य, संस्कृति और गांधी

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में साहित्य, संस्कृति और फिल्म के माध्यम से भारतीय इतिहास के उन तत्वों के उत्खनन की जरुरत है जिनसे भारतीय संस्कृति निर्मित होती है। वर्तमान भारतीय समाज में आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता के नाम पर जिस संस्कृति को हमारे साहित्य में, फिल्मों में जगह मिली है उनके विश्लेषण करने की आज बेहद आवश्यकता है ताकि संस्कृति के उन अवयवों की तलाश सुनिश्चित हो सके जिनसे भविष्य के भारत के निर्माण में एक सुस्पष्ट दृष्टि मिल सके।

साहित्य, सिनेमा और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं में आये बदलावों पर एक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन किया जा रहा है। इस संगोष्ठी में समय और साहित्य, गांधी और विश्व दृष्टि, कला, संस्कृति और फिल्म, साहित्य के माध्यम से फिल्म लेखन, साहित्य के माध्यम से इतिहास लेखन और इतिहास लेखन में फिल्म और साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर विभिन्न विषय विशेषज्ञों के माध्यम से विचार विमर्श किया जाएगा।

साहित्य के माध्यम से फिल्मों को देखना और फिल्मों में साहित्य किस तरह भारतीय संस्कृति को प्रतिबिंबित कर रहा है इस पर गहनता से विचार किया जा रहा है इसके विश्लेषण की भी आवश्यकता है। स्वतंत्रता संघर्ष की स्मृतियों को उनके नायकों को उनकी ऐतिहासिक अवस्थिति को फिल्मों में किस तरह देखा गया है और समझा गया है, इस पर विचार किया जाएगा। वर्तमान में फिल्म निर्माण में किन तत्वों को समावेशित किया गया है उनकी पड़ताल भी सुनिश्चित किया जाना इसलिए जरुरी है ताकि भारत भविष्य की कल्पना का एक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और तार्किक आधार विकसित हो।

स्वतंत्रता के पंद्रह वर्षों बाद ऑल इंडिया रेडियो से एक कार्यक्रम प्रसारित हुआ था जिसमें भारत में कार्यरत उन विदेशियों के बारे में जानकारी प्रसारित की गयी थी, जिन्होंने भारत में रहकर ब्रिटिश राज्य की आलोचना की और यहीं बसकर गांधीवादी तरीकों से समाज सेवा की और स्वतंत्रता प्राप्ति में अपना महत्वपूर्ण योगदान किया। आजादी के 75 वर्ष बाद अमृत महोत्सव में ऐसे अनेक नायकों को याद किया जाना, उनके योगदान पर चिंतन करना अकादमिक जगत में विचार की नयी दृष्टि और जानकारी प्रदान कर सकता है।

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का संघर्ष कई मायनों में एक हिंसक संघर्ष

रहा, जिसके कारण ब्रिटिश साम्राज्य ने कई ऐसे प्रतिबन्ध लगाए और अधिनियम बनाए जिनके चलते शोषण और दमन और भी अधिक आसान हो गया क्योंकि हिंसा ने ब्रिटिश साम्राज्य को दमन का एक औचित्य प्रदान किया था। उसके बाद गांधी जी के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम का पूरा चरित्र अहिंसक रहा और परिणामस्वरूप देश आजाद हुआ। गांधी की अहिंसा के वैश्विक परिप्रेक्ष्य को समझने के लिए हमें प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से लेकर भारत की आजादी तक के विकास को समझने की जरुरत है, 1857 का विद्रोह सबसे ज्यादा व्यापक था और स्थानीय विद्रोहों का सर्वोच्च रूप था। इस तरह के ब्रिटिश विरोधी विद्रोह ने, जिसे अंग्रेज इतिहासकारों ने 'सिपाही विद्रोह' का नाम दिया था, राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास के एक चरण की समाप्ति की घोषणा की। यह उन विद्रोहों का उच्चतर रूप था जिन्हें संयुक्त रूप से किसानों ने और उनका शोषण करने वाले सामंतों ने चलाया था ताकि 'वर्ण-जाति' संबंधों को बरकरार रखा जा सके और इन संबंधों पर आधारित ग्रामीण व्यवस्था को भी बनाए रखा जा सके जो अंग्रेजों के आने से पूर्व देश में मौजूद थी। इसके साथ ही यह एक खास तरह के राष्ट्रीय संघर्ष का अंतिम चरण था। अंततः 1857 के संघर्ष के बाद ही घटनाओं ने साबित कर दिया कि इस तरह के संघर्षों को कभी भी सफलता नहीं मिल सकती। ऐसे में यह संगोष्ठी इन प्रश्नों पर विचार करेगी कि क्या कारण है कि 1857 के विद्रोह के दमन के बाद शुरू हुए राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन ने अपने को आम जनता के सशस्त्र संघर्षों से अलग रखा? क्या वजह है कि इस आंदोलन के आम जनसमुदाय तक पहुंच जाने के बाद भी इसका केंद्रीय नारा 'अहिंसात्मक संघर्ष' ही बना रहा? क्या कारण है कि उस आंदोलन के नेताओं ने विदेशी शासकों से तालमेल कर सशस्त्र जनसंघर्ष के 'खतरे' से अपने को बचाए रखा?

गांधी के संदर्भ में विश्व दृष्टि के अंतर्गत अहिंसा के परिप्रेक्ष्य को वैश्विक पटल पर समझने का प्रयास तो हुआ है पर वर्तमान में गांधी की अहिंसा और विश्व दृष्टि को लेकर कई प्रश्न आज भी बने हुए हैं, जिन पर विचार करना बेहद आवश्यक है इस संगोष्ठी में गांधी और विश्व दृष्टि के इस परिप्रेक्ष्य को द्वितीय सत्र में विचार हेतु रखा गया है।

संगोष्ठी के निम्न उप-विषय होंगे (Sub Themes)

1. समय और साहित्य
2. गांधी और विश्व दृष्टि
3. कला, संस्कृति और फिल्म
4. इतिहास लेखन और स्वतंत्रता के नायक
5. साहित्य, फिल्म और इतिहास लेखन का संबंध